

03-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



"मीठे बच्चे- बाप द्वारा जो नॉलेज मिली है वह बुद्धि में कायम रखनी है, सवेरे-सवेरे उठ स्वदर्शन चक्रधारी बन विचार सागर मंथन करना है"









प्रश्नः- इस ईश्वरीय पढ़ाई का लॉ (कायदा) कौन सा है? उसके लिए कौन सा डायरेक्शन मिला हुआ है?



उत्तरः- इस ईश्वरीय पढ़ाई का लॉ है नियमित पढ़ना। कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना यह लॉ नहीं है। बाबा ने पढ़ाई के लिए बहुत प्रबन्ध दिये हैं। पढ़ाई (मुरली) यहाँ से पोस्ट में जाती है। 7 दिन का कोर्स लेकर कहाँ भी पढ़ सकते हो। पढ़ाई कभी मिस नहीं करनी है।



M.M.M.....imp.







गीतः- ओम् नमो शिवाए.. Click

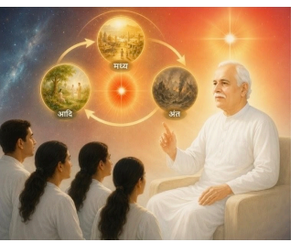
ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब जूठी माया है।
जो अपना सब कुछ छोड़ चला,
उसने ही तुमको पाया है।
जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

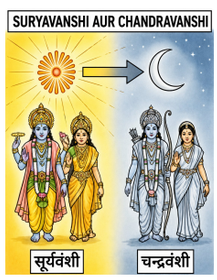
Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

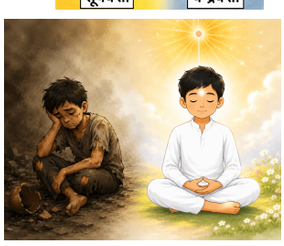


ओम् शान्ति। बच्चे जो यहाँ बैठे हैं वह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त अथवा स्वदर्शन चक्र को याद करते हैं। बाप ने बच्चों को नॉलेज दी है कि स्वदर्शन चक्रधारी बनो। तुम ब्राह्मण बच्चों का उद्देश्य है स्वदर्शन चक्रधारी बनना। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, यह 84 जन्मों के चक्र को बुद्धि में रखना है। **दूसरा सब बुद्धि से निकाल देना है।** अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है बरोबर बाबा ने हमको सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी बनाया था, फिर 84 जन्म लिए हैं। चलते-फिरते, उठते-बैठते यह स्व आत्मा को बाप का और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। अभी तुमको शिवबाबा ने शूद्र से ब्राह्मण बनाया है। बाबा ने समझाया है तुम 84 जन्मों के चक्र की बाजोली कैसे खेलते हो। पहले-पहले हम ब्राह्मण हैं, हम ब्राह्मणों को रचने वाला ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा है। रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। यह नॉलेज बुद्धि में कायम रखनी है। सुबह को उठकर स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठ जाना चाहिए। हमने अपने 84 जन्मों के चक्र को जान लिया है। हम सब आत्माओं का रचयिता बाप एक है। कहते भी हैं हम सब भाई-भाई हैं। हमारा बाप वह





















निराकार परमपिता परमात्मा है, परमधाम में रहने वाला है। हम भी वहाँ रहते थे, वह हमारा बाबा है। बाबा अक्षर बहुत लवली है। शिवबाबा के मन्दिर में जाकर कितनी पूजा करते हैं, बहुत याद करते हैं।



बाप कहते हैं मैं तुमको मनुष्य से देवता, तुच्छ बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बनाता हूँ। तुच्छ बुद्धि अर्थात् शूद्र बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बनाया था अर्थात् ऊंच बुद्धि, पुरुषोत्तम बुद्धि बनाया था।





सभी पुरुष स्त्री इन लक्ष्मी-नारायण को नमन करते हैं। परन्तु यह नहीं जानते - यह कौन हैं? कब आये, क्या किया? बाप ने समझाया है यह भारत अविनाशी खण्ड है क्योंकि अविनाशी बाप परमपिता परमात्मा की भी जन्म भूमि है। पतित-पावन, सर्व के सद्गति दाता का जन्म स्थान है तो यह हुआ बड़े से बड़ा तीर्थ स्थान। इतना नशा थोड़ेही किसको है कि **यह परमपिता परमात्मा की, सर्व के सद्गति दाता बाप की जन्म भूमि है।**





पतित-पावन की जयन्ती भारत में हुई है। शिव जयन्ती मनाते हैं तो जरूर शिव का जन्म यहाँ ही होता है। यह भारत बड़ा तीर्थ स्थान है। परन्तु ड्रामा अनुसार किसको पता नहीं कि यह हमारे गॉड फादर अथवा मात-पिता, पतित-पावन सर्व के सद्गति दाता



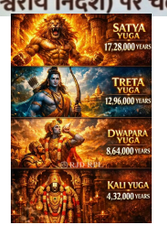


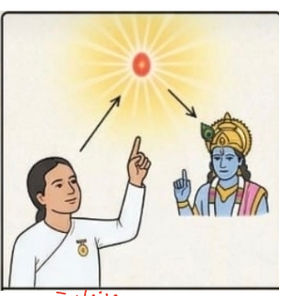


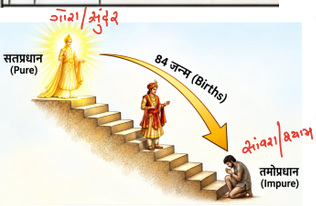
का जन्म स्थान है इसलिए भारत भूमि को वन्दे मातरम् कहते हैं अर्थात् इस भूमि पर यह बच्चियाँ जो श्रीमत से भारत को स्वर्ग बनाती हैं, उनको यह नशा रहना चाहिए कि श्रीमत पर हम कल्प-कल्प भारत को पैराडाइज बनाते हैं। जो जितना श्रीमत पर चलेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। Simple Math.. भारतवासियों ने कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। तुम जानते हो बाबा जिसका यह भारत जन्म स्थान है, उसने जो धर्म स्थापन किया, उसकी है गीता। गीता किसने गाई, यह भारतवासी भूल गये हैं। कितना फ़र्क हो गया है। कहाँ निराकार शिव, कहाँ श्रीकृष्ण। तुम जानते हो श्रीकृष्ण की आत्मा जो गोरी थी वह अब बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तमोप्रधान बन गई है। फिर इनमें प्रवेश कर इनको सो श्रीकृष्ण गोरा बना रहा हूँ इसलिए श्रीकृष्ण को सांवरा और गोरा, श्याम और सुन्दर कहते हैं। समझा? यह सतयुग का पहला नम्बर सुन्दर प्रिन्स था। इनकी महिमा है मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म। भारतवासी यह नहीं जानते कि राधे कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का आपस में क्या सम्बन्ध है! बाप कहते हैं - अब तक तुम जो कुछ पढ़ते आये हो, उनमें कोई सार नहीं है।

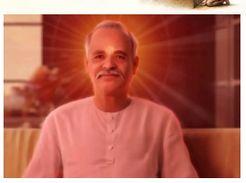


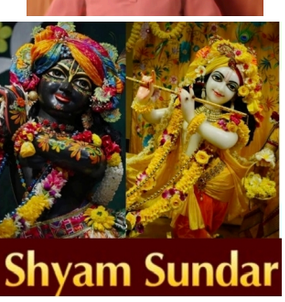










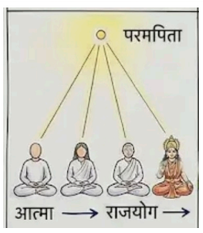




Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

Mind very well...



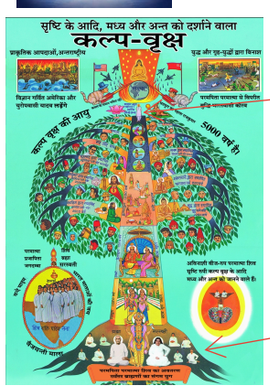


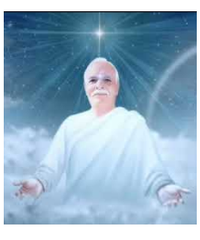


अब तुम सम्मुख बैठे हो। जानते हो बाबा 5 हजार वर्ष के बाद हमको फिर से राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। तुम जानते हो श्रीकृष्ण की आत्मा ने भी आगे जन्म में यह ज्ञान प्राप्त किया है, जो अब कर रहे हैं, जिसका नाम मैंने ब्रह्मा रखा है। श्रीकृष्ण के बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ। तुम मरजीवा बने हो ना। तुम्हारे अव्यक्त नाम भी रखे थे। अब नहीं रखते क्योंकि बहुतों ने फारकती दे दी। बाप का बनकर नाम रखाकर भाग जाए, यह तो शोभता नहीं है इसलिए नाम देना बंद कर दिया। अब तुम ब्राह्मण बने हो। **प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, शिवबाबा के पोत्रे हो**। बाप कहते हैं वर्सा तुमको मुझ से लेना है तो मुझे याद करो। इनका यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। सूक्ष्मवतन में जो ब्रह्मा दिखाते हैं वह तो पावन है। सूक्ष्मवतन में प्रजापिता तो हो नहीं सकता। बाप समझाते हैं यह व्यक्त है, झाड़ के पिछाड़ी में खड़ा है। यहाँ बच्चों के साथ योग में बैठे हैं पवित्र फरिश्ता बनने के लिए। तो सूक्ष्मवतन में दिखाना पड़े। यहाँ भी प्रजापिता जरूर चाहिए। वह अव्यक्त, यह व्यक्त। तुम भी फरिश्ते बनने आये हो। इसमें ही मनुष्य मँझते हैं क्योंकि यह है बिल्कुल नया











Green = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



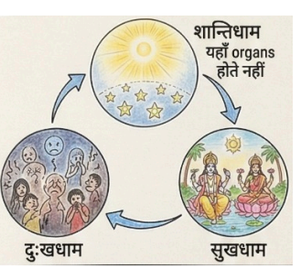
The Universal Light



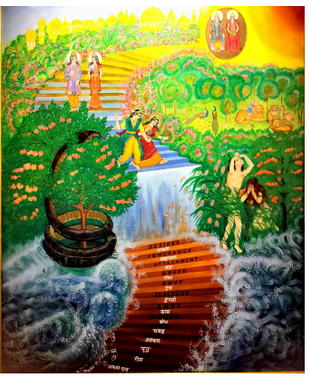
ज्ञान। कोई भी शास्त्र आदि में यह ज्ञान है नहीं। भगवान एक है ऊंच ते ऊंच निराकार परमपिता परमात्मा, सब आत्माओं का बाप। उनके रहने का स्थान है परमधाम। उनको सब याद करते हैं कि आओ, हमारे ऊपर माया का परछाया पड़ गया है। पतित बन गये हैं। यह बातें नये की बुद्धि में बैठेंगी नहीं। अब तुम रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। सतयुग में हम बहुत थोड़े राज्य करते थे। वहाँ अधर्म की बात हो नहीं सकती। शास्त्रों में कितनी बातें लिख दी हैं, परन्तु उनमें कोई सार नहीं है। सीढ़ी उतरते-उतरते अब अन्त में आकर पतित बने हैं। अब तुम जम्प करते हो उतरने में 84 जन्म लगे, जम्प सेकेण्ड में करते हो।







तुम बच्चे अब राजयोग सीख रहे हो, फिर शान्तिधाम में जाकर सुखधाम में आ जायेंगे। यह है दु:खधाम। पहले तुम आये हो तो बाप भी पहले-पहले तुमसे मिलते हैं। यहाँ बाप और बच्चों, आत्मा और परमात्मा का मेला लगता है। हिसाब है ना- हमको 5



हजार वर्ष हुए बाप से विदाई लिए। पहले-पहले स्वर्ग में पार्ट बजाया, वहाँ से पार्ट बजाते बजाते तुम नीचे उतरते आये हो। अभी तुम बाप के पास आ गये हो, बाकी थोड़े बहुत जो होंगे वह भी आ जायेंगे। फिर तुम्हारी पढ़ाई खत्म हो जायेगी, सबको यहाँ आना है। वहाँ जब खाली हो जायेगा फिर बाबा सबको ले जायेगा। यह समझने की बातें हैं। पढ़ना है। स्कूल में कभी जाना, कभी न जाना यह लॉ नहीं है। बाबा ने पढ़ाई के लिए बहुत प्रबन्ध भी दिये हैं। नहीं तो कभी भी किसके पास पढ़ाई पोस्ट में नहीं जाती है। यह बेहद बाप की पढ़ाई पोस्ट में जाती है। कितने कागज छपते हैं। कहाँ-कहाँ जाते हैं। **7 दिन का कोर्स लेकर फिर कहाँ भी पढ़ते रहो**। इस समय सभी आधाकल्प के रोगी हैं, इसलिए 7 रोज़ भट्ठी में रखना पड़ता है। यह 5 विकारों की बीमारी सारी दुनिया में फैली हुई है। सतयुग में तुम्हारी काया निरोगी थी, एवरहेल्दी- एवरवेल्दी थे। अब तो क्या हाल हो गया है। **यह सारा खेल भारत पर है।** तुमको 84 जन्मों की अब स्मृति आई है। कल्प कल्प तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो और चक्रवर्ती राजा भी बनते हो। यह राजाई स्थापन हो रही है, इसमें

Just Churning(मन मत)

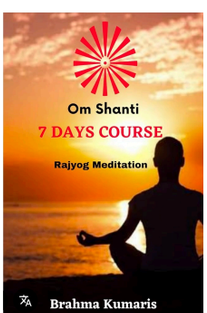
It seems like All Souls are descended Now.

It means पढ़ाई is Already finished in 2017 It is just Revision/finale Touching

So, Be Prepared for finale exam.



Thank you so much मेरे मीठे बाबा...







Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

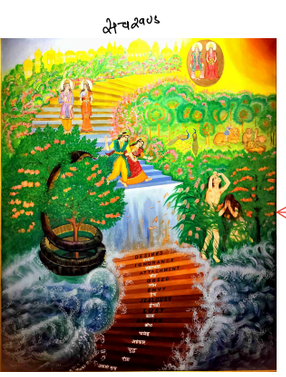


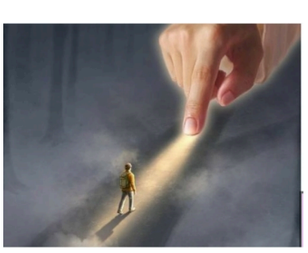
नम्बरवार पद होंगे। प्रजा भी अनेक प्रकार की चाहिए। दिल से पूछना चाहिए कि हम कितनों को आप समान स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। जितना जो बनायेगा वही ऊंच पद पायेगा। तुमको बाप माया से युद्ध करना सिखलाते हैं, इसलिए इनका नाम युधिष्ठिर रख दिया है। माया पर जीत पाने की युद्ध सिखलाते हैं। युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र भी दिखाते हैं। गाया भी जाता है **माया जीते जगत जीत**, कितना समय तुम्हारी जीत कायम रही फिर हार कितना समय खाते हो। यह भी तुम जानते हो। यह जिस्मानी युद्ध नहीं है। न देवताओं और असुरों की युद्ध है। न कौरवों और पाण्डवों की युद्ध है। झूठी काया, झूठी माया... यह भारत झूठ खण्ड है। सच खण्ड था, जब से रावण राज्य शुरू हुआ तब से झूठ खण्ड बन गया। ईश्वर के लिए कितना झूठ बोलते हैं। कितना कलंक लगाते हैं। कलंगी अवतार भी गाया हुआ है। सबसे जास्ती कलंक बाप पर लगते हैं। उनके लिए कहते कच्छ-मच्छ अवतार, पत्थर भित्तर में ईश्वर। कितनी गाली देते हैं। क्या यह सभ्यता है? अभी तुमको रोशनी मिली है। तुम जानते हो बाप हमको रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का

ये तो पक्का कर लो..









चढ़ाओ नशा...

कहने को भगवान को मानते थे, कब कहना भगवान की मानते थे
चले थे डगर में अन्धेरों में गिरते, अभी ज्ञान की चाँदनी मिल गयी है
हमें आप बाबा ऐसे मिले हैं कि जैसे नई जिन्दगी मिल गयी है...



चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

03-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन









राज़ समझा रहे हैं, जो और कोई नहीं जानते। बाप ही सद्गति दाता है। बाबा के ज्ञान से सबकी सद्गति होती है। Simple Logic बाकी जो खुद ही दुर्गति में हैं वह कैसे औरों की सद्गति करेंगे। तुमको आकर राजाओं का राजा बनाता हूँ। तुम ही पवित्र पूज्य थे, अब आकर पुजारी बने हो। पवित्र राजाओं की अपवित्र राजायें पूजा करते हैं। सतयुग में डबल सिरताज थे। विकारी राजा होते हैं तो सिंगल ताज रहता है। वह भी महाराजा महारानी। परन्तु पवित्र को अपवित्र जाकर माथा टेकते हैं। वह भारतवासी पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले, वही भारतवासी पतित प्रवृत्ति मार्ग वाले बनते हैं। अब बाप कहते हैं तुम्हारा इस मृत्युलोक में अन्तिम जन्म है। **अभी मैं आया हूँ तुमको फिर से सतयुग में ले जाने।** यह मूसलों की लड़ाई 5 हजार वर्ष पहले भी लगी थी। As Certain as Death यह पुरानी दुनिया खलास होनी है। बाप समझाते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनना है। कमल फूल समान तुम ब्राह्मण बने हो। परन्तु यह निशानी विष्णु को दे दी है क्योंकि तुम सदैव एकरस नहीं रहते हो। Here is the Reason आज कमल फूल समान बनते, दो वर्ष के बाद पतित बन पड़ते हैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...



हो गई है शाम चलो लौट चले घर....



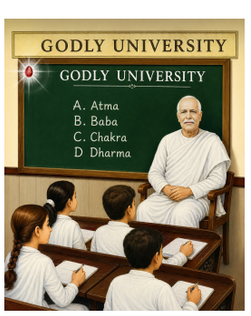


तुम्हारा यह सर्वोत्तम कुल है। तुम ब्राह्मण चोटी हो। फिर पुर्नजन्म लेते-लेते देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते हो। शूद्र से फट से देवता थोड़ेही बनेंगे। ब्राह्मण चोटी तो चाहिए। अब ब्राह्मणों को बाबा पढ़ा रहे हैं। तो ऐसे बाबा को फारकती थोड़ेही देनी चाहिए। बाबा कहते हैं आश्चर्यवत मेरा बनन्ती, सुनन्ती फिर भी भागन्ती हो माया के बनन्ती। ट्रेटर बनन्ती, मेरी निन्दा करावन्ती... उसको कहा जाता है सतगुरू का निन्दक स्वर्ग का ठौर न पावन्ती। बाकी वह भक्ति मार्ग के गुरू हैं, वे कोई सद्गति दाता नहीं हैं। सभी आत्माओं का बाप, टीचर, गुरू एक ही निराकार बाप है। वही सबका उद्धार करने आया है। **आगे चलकर समझेंगे फिर टू लेट हो जायेंगे।** वह फिर अपने ही धर्म में चले जायेंगे। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ है देवता धर्म। **उनसे भी ऊंच तुम ब्राह्मण हो जो बाप के साथ बैठे हो।** तुमको पढ़ाने वाला विचित्र और विदेही है। बाप कहते हैं मुझे देह नहीं है। मुझे कहते हैं शिव, मेरा नाम बदल नहीं सकता। और सबके शरीरों के नाम बदली होते हैं। मैं हूँ परम आत्मा, मेरी जन्म-पत्री





Coming soon...







कोई निकाल नहीं सकता। जब बेहद की रात होती है तब मैं आता हूँ दिन बनाने। अब है संगम, इन बातों को अच्छी तरह समझ कर फिर धारण करना चाहिए। स्मृति में लाना चाहिए। यहाँ तुम बच्चे आते हो, फुर्सत मिलती है। विचार सागर मंथन यहाँ अच्छा कर सकते हो। अच्छा!





मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सारः-





1) सर्वोत्तम कुल की स्मृति से गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कभी भी सद्गुरू की निंदा नहीं करानी है।





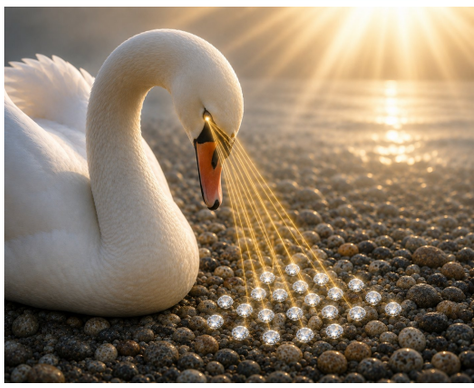
2) श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना और बनाना है। जब भी फुर्सत मिले तो विचार सागर मंथन जरूर करना है।







वरदान:- सदा कल्याणकारी भावना द्वारा गुणग्राही बनने वाले अचल अडोल भव

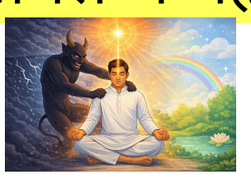






अपनी स्थिति अचल अडोल बनाने के लिए सदा गुणग्राही बनो।

अगर हर बात में गुणग्राही होंगे तो हलचल में नहीं आयेंगे।





गुणग्राही अर्थात् कल्याण की भावना।

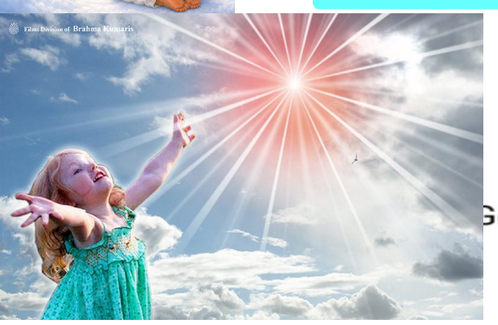
अवगुण में गुण देखना इसको कहते हैं गुणग्राही इसलिए अवगुण वाले से भी गुण उठाओ।



जैसे वह अवगुण में दृढ़ है ऐसे आप गुण में दृढ़ रहो। गुण का ग्राहक बनो, अवगुण का नहीं।



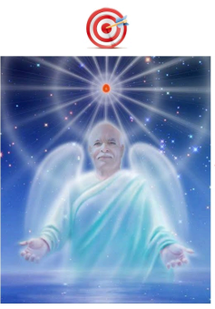
स्लोगन:- अपना सब कुछ बाप को अर्पण कर सदा हल्के रहने वाले ही फरिश्ते हैं।





ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो







बाप समान बनने के लिए ब्रहमा बाप को फालो करते चलो।



सोचो, (1) ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने? (2) उनकी क्या विशेषता रही? (3) सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा? (4) ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया। (5) श्वांस-श्वांस, सेकण्ड सेकण्ड सफल किया।



तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।





If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।
और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

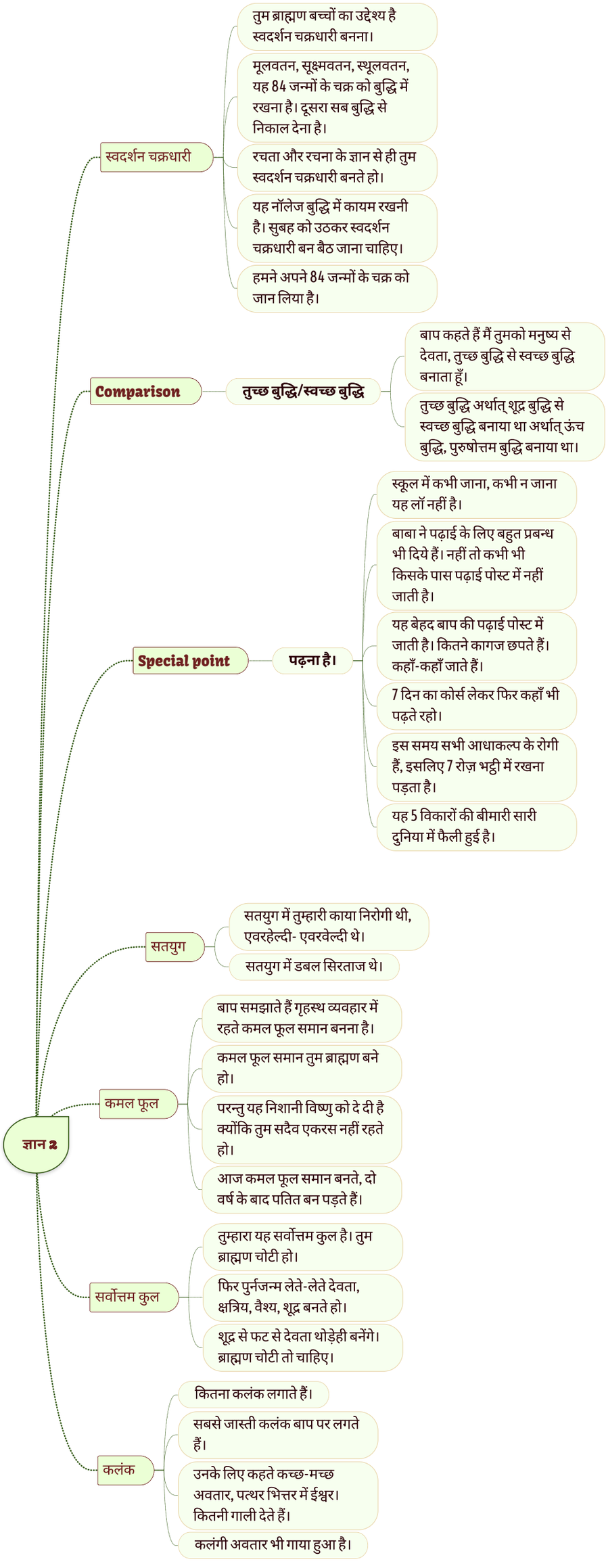
सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010
Revise: 14/06/2026

- ज्ञान ।
  - आत्मा
    - हम सब आत्माओं का रचयिता बाप एक है। कहते भी हैं हम सब भाई-भाई हैं।
    - यहाँ बाप और बच्चों, आत्मा और परमात्मा का मेला लगता है।
    - सभी आत्माओं का बाप, टीचर, गुरू एक ही निराकार बाप है।
  - परमात्मा
    - बाप कहते हैं - अब तक तुम जो कुछ पढ़ते आये हो, उनमें कोई सार नहीं है।
      - सतयुग में हम बहुत थोड़े राज्य करते थे। वहाँ अधर्म की बात हो नहीं सकती।
      - शास्त्रों में कितनी बातें लिख दी हैं, परन्तु उनमें कोई सार नहीं है।
    - भगवान एक है ऊंच ते ऊंच निराकार परमपिता परमात्मा, सब आत्माओं का बाप। उनके रहने का स्थान है परमधाम।
    - बाप ही सद्गति दाता है।
      - बाबा के ज्ञान से सबकी सद्गति होती है।
      - तुमको आकर राजाओं का राजा बनाता हूँ।
      - बाकी जो खुद ही दुर्गति में हैं वह कैसे औरों की सद्गति करेंगे।
    - बाप कहते हैं मुझे देह नहीं है।
      - मुझे कहते हैं शिव, मेरा नाम बदल नहीं सकता।
      - और सबके शरीरों के नाम बदली होते हैं।
      - मैं हूँ परम आत्मा, मेरी जन्म-पत्री कोई निकाल नहीं सकता।
  - ब्रम्हा बाबा
    - तुम जानते हो श्रीकृष्ण की आत्मा जो गोरी थी वह अब बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तमोप्रधान बन गई है।
      - श्रीकृष्ण के बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ।
      - फिर इनमें प्रवेश कर इनको सो श्रीकृष्ण गोरा बना रहा हूँ इसलिए श्रीकृष्ण को सांवरा और गोरा, श्याम और सुन्दर कहते हैं।
    - यह सतयुग का पहला नम्बर सुन्दर प्रिन्स था। इनकी महिमा है मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म।
      - तुम जानते हो श्रीकृष्ण की आत्मा ने भी आगे जन्म में यह ज्ञान प्राप्त किया है, जो अब कर रहे हैं, जिसका नाम मैंने ब्रह्मा रखा है।
    - वह अव्यक्त, यह व्यक्त।
      - सूक्ष्मवतन में जो ब्रह्मा दिखाते हैं वह तो पावन है।
      - सूक्ष्मवतन में प्रजापिता तो हो नहीं सकता।
        - यहाँ बच्चों के साथ योग में बैठे हैं पवित्र फरिश्ता बनने के लिए।
        - बाप समझाते हैं यह व्यक्त है, झाड़ के पिछाड़ी में खड़ा है।
        - यहाँ भी प्रजापिता जरूर चाहिए।
  - माया
    - उनको सब याद करते हैं कि आओ, हमारे ऊपर माया का परछाया पड़ गया है।
    - तुमको बाप माया से युद्ध करना सिखलाते हैं, इसलिए इनका नाम युधिष्ठिर रख दिया है।
      - माया पर जीत पाने की युद्ध सिखलाते हैं।
      - गाया भी जाता है माया जीते जगत जीत, कितना समय तुम्हारी जीत कायम रही फिर हार कितना समय खाते हो।
      - यह जिस्मानी युद्ध नहीं है। न देवताओं और असुरों की युद्ध है। न कौरवों और पाण्डवों की युद्ध है।
      - झूठी काया, झूठी माया... यह भारत झूठ खण्ड है। सच खण्ड था, जब से रावण राज्य शुरू हुआ तब से झूठ खण्ड बन गया।
    - बाबा कहते हैं आश्चर्यवत मेरा बनन्ती, सुनन्ती फिर भी भागन्ती हो माया के बनन्ती।
      - ट्रेटर बनन्ती, मेरी निन्दा करावन्ती... उसको कहा जाता है सतगुरू का निन्दक स्वर्ग का ठौर न पावन्ती।


ज्ञान 2
स्वदर्शन चक्रधारी
तुम ब्राह्मण बच्चों का उद्देश्य है स्वदर्शन चक्रधारी बनना।
मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, यह 84 जन्मों के चक्र को बुद्धि में रखना है। दूसरा सब बुद्धि से निकाल देना है।
रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो।
यह नॉलेज बुद्धि में कायम रखनी है। सुबह को उठकर स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठ जाना चाहिए।
हमने अपने 84 जन्मों के चक्र को जान लिया है।
Comparison
तुच्छ बुद्धि/स्वच्छ बुद्धि
बाप कहते हैं मैं तुमको मनुष्य से देवता, तुच्छ बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बनाता हूँ।
तुच्छ बुद्धि अर्थात् शूद्र बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बनाया था अर्थात् ऊंच बुद्धि, पुरुषोत्तम बुद्धि बनाया था।
Special point
पढ़ना है।
स्कूल में कभी जाना, कभी न जाना यह लॉ नहीं है।
बाबा ने पढ़ाई के लिए बहुत प्रबन्ध भी दिये हैं। नहीं तो कभी भी किसके पास पढ़ाई पोस्ट में नहीं जाती है।
यह बेहद बाप की पढ़ाई पोस्ट में जाती है। कितने कागज छपते हैं। कहाँ-कहाँ जाते हैं।
7 दिन का कोर्स लेकर फिर कहाँ भी पढ़ते रहो।
इस समय सभी आधाकल्प के रोगी हैं, इसलिए 7 रोज़ भट्ठी में रखना पड़ता है।
यह 5 विकारों की बीमारी सारी दुनिया में फैली हुई है।
सतयुग
सतयुग में तुम्हारी काया निरोगी थी, एवरहेल्दी- एवरवेल्दी थे।
सतयुग में डबल सिरताज थे।
कमल फूल
बाप समझाते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनना है।
कमल फूल समान तुम ब्राह्मण बने हो।
परन्तु यह निशानी विष्णु को दे दी है क्योंकि तुम सदैव एकरस नहीं रहते हो।
आज कमल फूल समान बनते, दो वर्ष के बाद पतित बन पड़ते हैं।
सर्वोत्तम कुल
तुम्हारा यह सर्वोत्तम कुल है। तुम ब्राह्मण चोटी हो।
फिर पुर्नजन्म लेते-लेते देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते हो।
शूद्र से फट से देवता थोड़ेही बनेंगे। ब्राह्मण चोटी तो चाहिए।
कलंक
कितना कलंक लगाते हैं।
सबसे जास्ती कलंक बाप पर लगते हैं।
उनके लिए कहते कच्छ-मच्छ अवतार, पत्थर भित्तर में ईश्वर। कितनी गाली देते हैं।
कलंगी अवतार भी गाया हुआ है।

ज्ञान 3

भारत

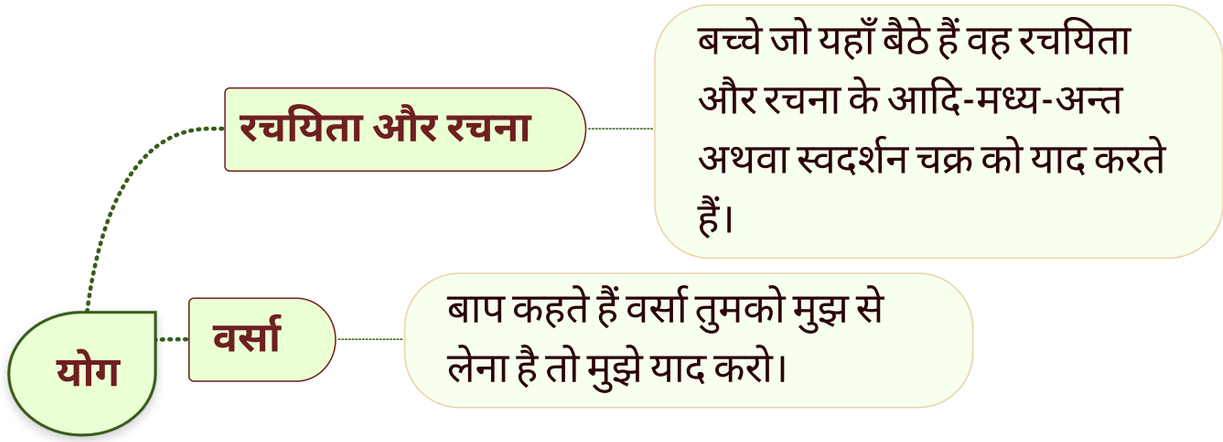
पतित-पावन, सर्व के सद्गति दाता का जन्म स्थान है तो यह हुआ बड़े से बड़ा तीर्थ स्थान।

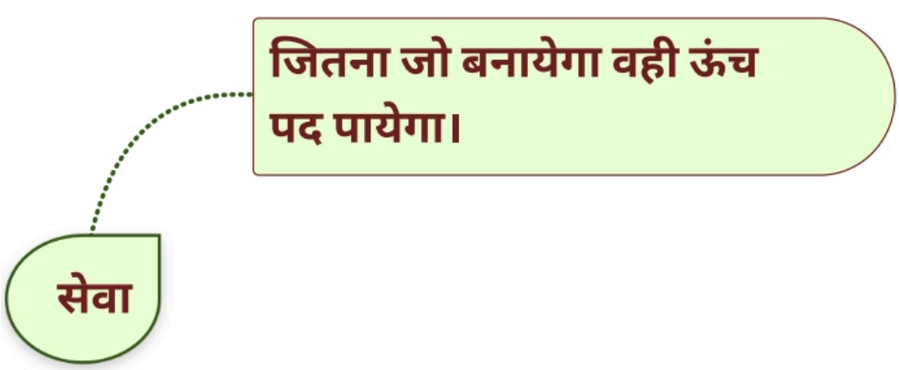
पतित-पावन की जयन्ती भारत में हुई है।

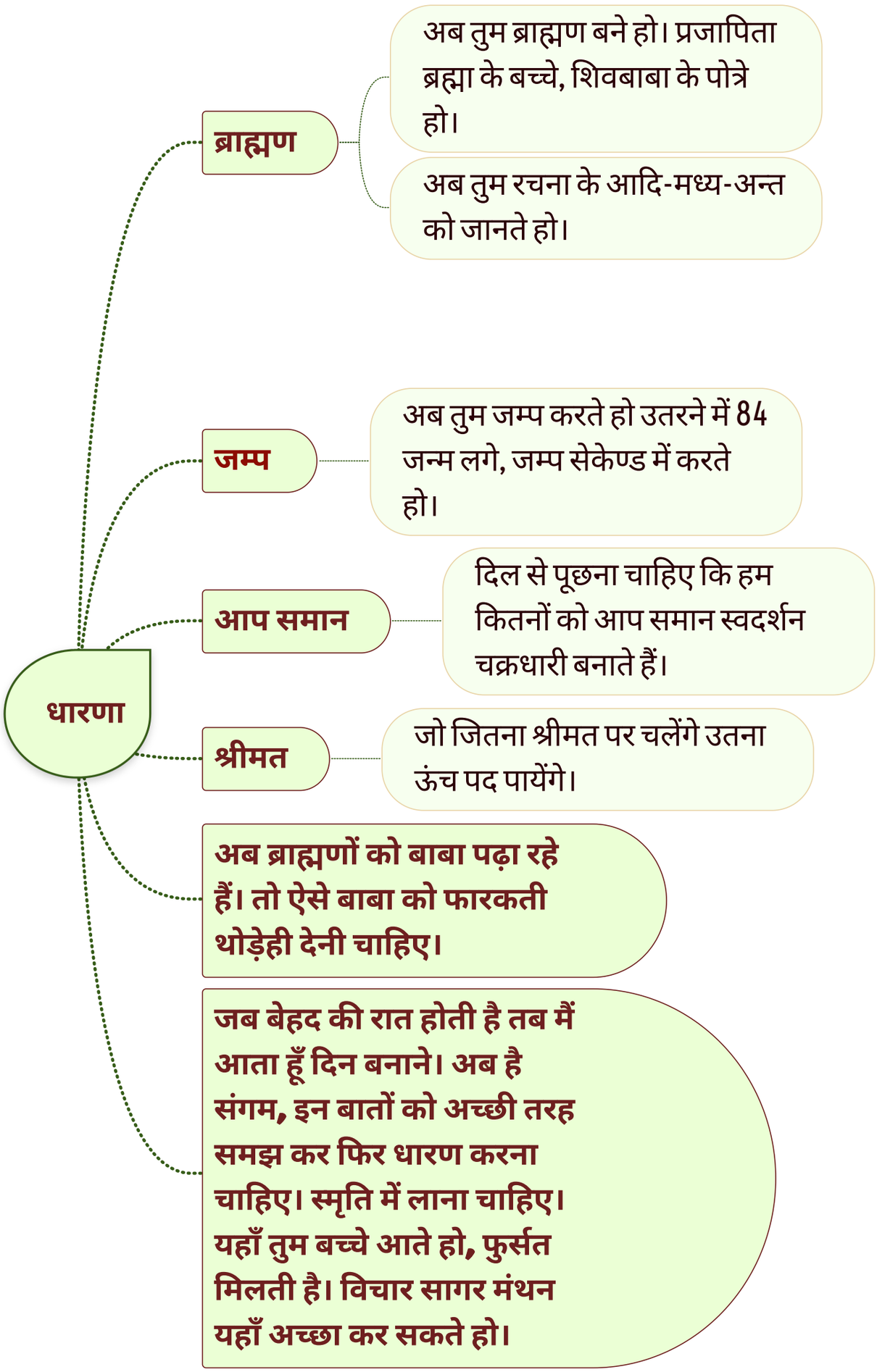
शिव जयन्ती मनाते हैं तो जरूर शिव का जन्म यहाँ ही होता है। यह भारत बड़ा तीर्थ स्थान है।

तुम जानते हो बाबा जिसका यह भारत जन्म स्थान है, उसने जो धर्म स्थापन किया, उसकी है गीता। गीता किसने गाई, यह भारतवासी भूल गये हैं।

परन्तु ड्रामा अनुसार किसको पता नहीं कि यह हमारे गॉड फादर अथवा मात-पिता, पतित-पावन सर्व के सद्गति दाता का जन्म स्थान है इसलिए भारत भूमि को वन्दे मातरम् कहते हैं अर्थात् इस भूमि पर यह बच्चियाँ जो श्रीमत से भारत को स्वर्ग बनाती हैं, उनको यह नशा रहना चाहिए कि श्रीमत पर हम कल्प-कल्प भारत को पैराडाइज बनाते हैं।


रचयिता और रचना
बच्चे जो यहाँ बैठे हैं वह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त अथवा स्वदर्शन चक्र को याद करते हैं।
योग
वर्सा
बाप कहते हैं वर्सा तुमको मुझ से लेना है तो मुझे याद करो।


जितना जो बनायेगा वही ऊंच पद पायेगा।
सेवा


धारणा
ब्राह्मण
अब तुम ब्राह्मण बने हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, शिवबाबा के पोत्रे हो।
अब तुम रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो।
जम्प
अब तुम जम्प करते हो उतरने में 84 जन्म लगे, जम्प सेकेण्ड में करते हो।
आप समान
दिल से पूछना चाहिए कि हम कितनों को आप समान स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं।
श्रीमत
जो जितना श्रीमत पर चलेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे।
अब ब्राह्मणों को बाबा पढ़ा रहे हैं। तो ऐसे बाबा को फारकती थोड़ेही देनी चाहिए।
जब बेहद की रात होती है तब मैं आता हूँ दिन बनाने। अब है संगम, इन बातों को अच्छी तरह समझ कर फिर धारण करना चाहिए। स्मृति में लाना चाहिए। यहाँ तुम बच्चे आते हो, फुर्सत मिलती है। विचार सागर मंथन यहाँ अच्छा कर सकते हो।

वरदानः-

सदा कल्याणकारी भावना द्वारा गुणग्राही बनने वाले अचल अडोल भव

अपनी स्थिति अचल अडोल बनाने के लिए सदा गुणग्राही बनो।

अगर हर बात में गुणग्राही होंगे तो हलचल में नहीं आयेंगे।

गुणग्राही अर्थात् कल्याण की भावना।

अवगुण में गुण देखना इसको कहते हैं गुणग्राही इसलिए अवगुण वाले से भी गुण उठाओ।

जैसे वह अवगुण में दृढ़ है ऐसे आप गुण में दृढ़ रहो।

Key point

1. सदा कल्याणकारी भावना
2. अवगुण में गुण देखना

ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

बाप समान बनने के लिए ब्रहमा बाप को फालो करते चलो।

ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया।

तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

सोचो, ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने? उनकी क्या विशेषता रही? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा?

श्वांस-श्वांस, सेकण्ड सेकण्ड सफल किया।

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click



12.3.3. उठते ही बाप से गुडमार्निंग करो :

जरा सोचो तो सही...



(अ) प्रात: को पहले-पहले गुडमार्निंग किया जाता है। सवेरे-सवेरे कौन आकर तुमको गुडमार्निंग करते हैं? बाप आते ही हैं सवेरे। यह है बेहद का सवेरा और रात, जिसको कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। भल, बच्चे बने हैं परन्तु सवेरे उठ करके बाप को याद नहीं करते हैं। सवेरे-सवेरे उठ कर पहले-पहले शिव बाबा से गुडमार्निंग करें अर्थात् याद करें, तो बहुत खुशी भी रहे। परन्तु बहुत बच्चे हैं जो सवेरे उठ कर बाबा को बिल्कुल याद नहीं करते हैं। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठ कर भक्ति करते, पूजा करते, माला फेरते, मंत्र जपते। अब तो तुम बच्चों को आत्मा निश्चय करना है और सवेरे उठ कर बाबा से बातें करनी हैं बाबा गुडमार्निंग। परन्तु बाबा जानते हैं यह टेव किसको भी नहीं पड़ी हुई है। बाप कहते हैं — बच्चे, तुम्हारे सिर पर आधा कल्प का बोझा है, वह याद से उतारना है।

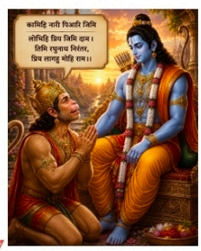




Attention Please..!



(आ) ज्ञान का चिंतन करो। सवेरे उठ कर प्यार से गुडमार्निंग करो, तो खुशी का पारा चढ़े। परन्तु माया चढ़ने नहीं देती। अगर बाप से कहाँ बेअदबी की, तो माया एकदम बुद्धियोग तोड़ डालती है। फिर बाह्यात फालतू बातों में बुद्धि लगी रहती है। स्वर्ग का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है? समझा?



(इ) बाबा जानते हैं प्रदर्शनी में बहुत सर्विस अच्छी करते हैं। परन्तु याद में बहुत कमज़ोर हैं। अक्ल नहीं है कि सवेरे उठ कर बाबा से गुडमार्निंग करनी चाहिए। भल टॉपिक्स पर ख्यालात चलाते हैं। वह तो कॉमन है। टॉपिक्स तो रोज़-रोज़ नयी निकाल समझा सकते हैं, परन्तु मुख्य बात है बाप को लव से याद करना, तो पाप कट जायें।

(ई) बाप ही इस समय तुम को आकर रूहानी आशिक बनाते हैं। अब तुम्हारी आत्मा जानती है कि हमारा माशूक शिव बाबा है। उनसे स्वर्ग का वर्सा पाना है। ऐसे शिव बाबा को सवेरे-सवेरे उठ कर गुडमार्निंग करो, याद करो। जितना याद करेंगे, उतना पाप कटते जायेंगे, देह-अभिमान टूटता जायेगा। ऐसा अभ्यास करते-करते वह





अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य



अवस्था जम जायेगी।

(उ) बाप के साथ बहुत लव रहना चाहिए। रात्रि को जल्दी सो जाओ, फिर जल्दी उठ कर याद करो। उठने से ही कहो — "बाबा गुडमार्निंग"। और कोई तरफ बुद्धि न जाये। जितना हो सके बाबा की याद में बैठ पावन बनना है।

Point to be Noted

(ऊ) स्नान भी अमृतवेले किया जाता है। सवेरे-सवेरे स्नान आदि कर फिर एकान्त में चक्कर लगाओ या बैठ जाओ, कमाई ही कमाई है। सवेरे में स्नान आदि